International Journal of Applied and Universal Research **E- ISSN No: 2395-0269**
Volume IV, Issue V, October 2017 Available online at: www.ijaur.com

पारिस्थितिकी पर्यटन (इकोटूरिज्म) का अध्ययन

रजनीश कुमार पटेल
भूगोल विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी)
महाविद्यालय रीवा (म.प्र.)

सारांश–
पर्यटन कोई नवीन विधा नहीं है। वास्तव में पर्यटन का स्वरूप यात्रा के रूप में मनुष्य अपने प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समूह में जाता था जैसे–जैसे सभ्यता एवं संस्कृति का विकास होता गया उसका स्वरूप क्रमशः बढ़ता चला गया। पर्यटन बहुआयामी विधा है। मनुष्य अपने निश्चित लक्ष्य को लेकर एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए यात्रा करता है और हर मनुष्य की आवश्यकतानुसार पर्यटन का लक्ष्य अलग–अलग होता है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिये एवं सुखमय जीवन के लिये पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आज भारत एक ऐसा देश है जो प्राकृतिक सुन्दरता के लिए जाना जाता है। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता को लोग अपने शब्दों से सही–सही बया नहीं कर पाते क्योंकि इतनी खूबसूरती का भौगोलिक स्थिति के विषय में चर्चा करें तो यहाँ के पहाड़ों की स्थिति अजीब है। हमारा देश प्राकृतिक सुन्दरता से काफी अमीर माना जाता है। यही कारण है कि यहाँ पर विदेशी पर्यटक यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता एवं यहाँ की अजूबे देखने के लिए आते हैं।

मुख्य शब्द – पारिस्थितिकी, पर्यटन, प्राकृतिक सुन्दरता, सभ्यता एवं संस्कृति ।

प्रस्तावना –
पर्यटन की संकल्पना मानव में जन्मजात प्रवृत्ति है। मानव में प्रकृति के रहस्यपूर्ण संरचना को समझने, उसको देखने की जिज्ञासा आदिकाल से रही है। मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के साथ 'पर्यटन' के प्रति विचारों में क्रमशः परिवर्तन होता गया। प्रारम्भ में पर्यटन की संकल्पना, मात्रा, भ्रमण, सैर सपाटा, आनन्द प्राप्ति पर आश्रित था। सर्वप्रथम 'टुअर' शब्द का प्रार्दुभाव हुआ जो कि लेटिन शब्द 'टोरनस' से बना है, जिसका अर्थ प्रारम्भ में 'वृत्तात्मक' उपकरण या स्थिति से लगाया जाता था।17वीं शदी के पूर्वार्द्ध तक यह शब्द एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने, यात्रा करने के लिए प्रयोग किया जाने लगा था। इसी शब्द से धीरे–धीरे 'टूरिस्ट' व 'टूरिज्म' शब्दों की उत्पत्ति हुई। 19वीं शदी के प्रारम्भिक वर्षों में अंग्रेजी साहित्य के कुछ विद्वानों ने प्रकृति–प्रेम की दुन्दुभी बजाई जिसने सारे यूरोप में एक नया आयाम व दिशा का दिग्दर्शन किया।

प्राकृतिक सौन्दर्य व प्रकृति वर्णन से ओत–प्रोत उनके ग्रन्थों में फूलों, पशु–पक्षियों, पर्वतों, चन्द्रमा, सूर्य, आकाश, दिन–रात, सुबह–शाम आदि वस्तुओं और घटनाओं के प्रति मानवीय प्रेम–भावनाओं को प्रदर्शित किया। 20वीं शदी से यात्राओं के कारकों में यह विचार एक अहम् कारक बनकर सामने आया और उत्पन्न हुआ, मनोरंजन, प्रकृति, दृश्यावलोकन हेतु यात्रा का क्रम। जिसे कि प्रायः लोग 'टूरिज्म' आम बोलचाल की भाषा में प्रयोग करते हैं। 'यात्रा' व 'पर्यटन' का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है या सीमित शब्दों में यह कहा जा सकता है कि 'पर्यटन' यात्रा की ही एक विशिष्ट अवस्था है। 18वीं शदी में पर्यटकों की बढ़ती हुई संख्या ने पर्यटन को जन्म दिया। 19वीं शदी तक विद्वानों ने इसे एक व्यवसाय के रूप में बढ़ाने की बात सोची, क्योंकि विदेशी पूंजी अर्जित करने का यह एक उत्तम व्यवसाय दृष्टिगोचर हो रहा था। 20वीं शदी तक पहुंचते–पहुंचते यह व्यवसाय बहुत लोकप्रिय व प्रभावपूर्ण सिद्ध होने लगा था, इसी लिए कई देशों को ही अपने देश का प्रमुख व्यवसाय बना लिया। आधुनिक समय में पर्यटन विस्तृत अर्थ में लिया जाने लगा है।
प्रारम्भ में 'पर्यटन' को एक विशिष्ठ प्रकार के मनोरंजन का खेल के रूप में जाना जाता रहा। योरोप में, भारत में शिक्षा के लिए भी देशाटन या पर्यटन या यात्रा करना आवश्यक माना जाता था। वर्तमान समय में 'पर्यटन' के कई उद्देश्य हो गये हैं। यहाँ तक कि पर्यटन सामाजिक परिस्थिति का द्योतक भी बन गया है। पिछले कुछ वर्षों में पर्यटन में आनन्द व सैर करने का दृष्टिकोण महत्वपूर्ण बन गया है।

आधुनिक समय में पर्यटन में कुछ नई प्रवृत्तियों का चलन हुआ है, जिसके आधार पर पर्यटन का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जा रहा है तथा यह एक 'विज्ञान' की दिशा में अग्रसर हो रहा है। पर्यटन आधुनिक समय में एक विस्तृत विचार (विषय) बन रहा है। जिसको कि आधुनिक समय में सांस्कृतिक आदान प्रदान या उत्थान का भी महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। इस प्रकार पर्यटन को निम्न शब्दों में परिभाषित कर सकते हैं। पर्यटन पर आधारित व्यवसाय जो कि पर्यटक का प्रबन्ध व निर्देशन करते हुए उसे उसकी इच्छित वस्तुयें प्रदान करता है और पर्यटक से धन, संस्कृति, ज्ञान लेता है।

वर्तमान समय में पर्यटन संसार का सबसे बड़ा और तीव्र गति से बढ़ता हुआ आधुनिक उद्योग है जो अन्य उद्योगों से प्रभावित नहीं, बल्कि अन्य उद्योग पर्यटन पर अविलम्बित है जैसे होटल, रेस्टोरेंट, परिवहन तंत्र, पर्यटन उद्योग से सम्बन्धित है। पर्यटन में प्रकृति के सौन्दर्य, उसकी अपार विविधता एवं भिन्नता निहित है। यह उतना ही असीम है, जितना मानव के मन में सौन्दर्य के प्रति उमड़ते विचार और सौन्दर्य की सराहना की ललक। यही कारण है कि प्राचीन काल में आज तक यात्रियों एवं अन्वेषकों ने अनेक प्रकार के

कष्ट सहकर साहसिक एवं रोमांचक यात्रायें की है। मानव नित नये और ज्ञात–अज्ञात स्थानों का भ्रमण करने, देखने और उसकी सराहना करने की तीव्र इच्छा ने आधुनिक पर्यटन को जन्म दिया।

पर्यटन से पारस्परिक सद्भाव और व्यापार को बल मिला है और स्थानीय विलुप्त प्रायः कला, नृत्य, संगीत, ललित्य में नव जीवन का संचार हुआ है। साथ ही राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था में सुदृढ़ बनाने में पर्यटन की अहम् भूमिका है। AIEST (Association International Experts Scientific Tourism) अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संघ पर्यटन विशेषज्ञ (स्विटिजरलैण्ड) ;भ्नद्रपामत – ज्ञतांद्धि हांजेकर एण्ड कार्फ के अनुसार पर्यटन के निम्नलिखित तत्व प्रकाश में आये हैं –

(प) ऐसी यात्रा जो आवास रहित हो।
(पप) यात्रा की प्रकृति अस्थायी हो।
(पपप) यात्रा का उद्देश्य धन प्राप्ति न हो।

अंग्रेजी शब्द ज्वनतपेउ का सम्बन्ध Tour से है जो लैटिन भाषा से लिया गया है। ज्वतदवे का अर्थ एक औजार से है, जो एक पहिये की भांति गोलाकार होता है। यह गोलाकार पिन है। इसी Tornos शब्द में यात्रा चक्र या पैकेज टूर एक मुश्त यात्रा का विचार सृजित हुआ जो आधुनिक पर्यटन का मुख्य आधार है।

Tourism या 'पर्यटन' शब्द के अन्तर्गत वे समस्त क्रियायें सम्मिलित हैं जो किसी यात्री की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हों। किसी यात्रा का पर्यटन से सम्पर्क स्थापित हो जाता है जो निम्न शर्तें पूर्ण करती है – यात्रा स्थायी हो, यात्रा ऐच्छिक हो, यात्रा में पारिश्रमिक अर्जित करना सम्मिलित न हो।

संस्कृत साहित्य में पर्यटन के लिए तीन शब्दों का प्रयोग किया गया है –

(i) पर्यटन – आराम या ज्ञान प्राप्ति के लिए यात्रा।
(ii) देशाटन – विदेश में आर्थिक लाभ के लिए यात्रा।
(iii) तीर्थाटन – धार्मिक केन्द्रों की यात्रा।

भारत में 1970 में पर्यटन सम्बन्धी आंकड़े निम्न परिभाषा के आधार पर एकत्रित किये गये हैं –

"एक व्यक्ति जो किसी विदेश यात्रा पर भारत की यात्रा कम से कम 24 घन्टे तक करे तथा उसका समय छः माह से अधिक न हो, बशर्ते वह यात्रा बिना देशान्तरवास व रोजगार दोनों से विहीन हो।" 1971 के बाद 'पर्यटन' शब्द की एक नई परिभाषा स्वीकार की गई जो निम्न प्रकार है –

"एक व्यक्ति जो कम से कम 24 घन्टे के अर्से के लिए विदेशी पार–पत्र पर बिना देशान्तरवास व बिना रोजगार के उद्देश्य यात्रा करें।"

विश्लेषण –

पारिस्थितिकी पर्यटन (इकोटूरिज्म) पर्यटन से जुड़ी हुई गतिविधि है। पारिस्थितिकी पर्यटन में पर्यटन के विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण एवं संविधान की परिकल्पना समाहित है। पारिस्थिति पर्यटन में जैव विविधता के साथ सामाजिक गतिविधियाँ भी उसके अन्तरंग में समाहित है। पारिस्थितिकी पर्यटन के मूल चिंतन में प्रकृति संरक्षण के साथ स्वरोजगार, आर्थिक धन उपार्जन, विदेशी मुद्रा का अर्जन, प्रकृति वैभव का दोहन कर, उसे बिना नुकसान पहुंचाये हुए अधिकाधिक विविध रूपों में, समाज के विभिन्न वर्ग, स्तर, आयु समूह को स्थानीय आधार पर अधिकाधिक लाभ प्रदाय की योजना समाहित है। साथ ही दीर्घकालिक बिना धुयें की है।

वर्ल्ड ट्रेवल एण्ड टूरिज्म काउन्सिल की रिपोर्ट के अनुसार भारत 2020 तक पर्यटन क्षेत्र में रोजगार के 50 करोड़ अतिरिक्त अवसर उत्पन्न कर सकता है। जहाँ तक पूरी दुनिया का सवाल है विश्व में हर बारहवें में से एक रोजगार यात्रा और पर्यटन से उत्पन्न होने वाली गतिविधियों से जुड़ा है और 2025 तक इसे और बढ़ाकर हर ग्यारहवें में से एक अवसर को पर्यटन से जोड़ा जा सकता है। यह अनुमान व्यक्तिगत और व्यावसायिक उपभोग, सरकारी खर्च, पर्यटन में पूँजीगत निवेश, यात्रा व पर्यटन के लिए कुल माँग और सकल घरेलू उत्पाद में इसके हिस्से संबंधी गणनाओं आदि पर आधारित है।

पर्यटन हमारी अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। विदेशी मुद्रा अर्जित करने, राष्ट्रीय आय बढ़ाने और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने, खास तौर पर दूर–दराज के और पिछड़े हुए इलाकों में रोजगार बढ़ाने में पर्यटन की विशेष भूमिका है। इतना ही नहीं पर्यटन दुनिया का सबसे बड़ा निर्यात उद्योग है। 2010 में भारत को पर्यटन से करीब 13 हजार 42 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा की आमदनी हुई। 2009–10 में इस क्षेत्र में 1.48 करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलने का अनुमान लगाया गया था, जो देश में कुल श्रम शक्ति के करीब 2.4 प्रतिशत के बराबर है। 2008 में दुनिया में विभिनन देशोंकी यात्रा करने वाले 62.5 करोड़ पर्यटकों में से केवल 23.6 लाख यानी 0.38 प्रतिशत पर्यटक भारत आए और इनसे होने वाली आमदनी का केवल 0.62 प्रतिशत ही भारत को मिला। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अभी हमने अपनी पर्यटन क्षमता का पूरा–पूरा लाभ नहीं उठाया है। 2014–15 में केन्द्रीय क्षेत्र में पर्यटन के लिए 195.00 करोड़ रुपये का बजट परिव्यय निर्धारित किया गया था जिसमें से वास्तव में 155.00 करोड़ रुपये ही खर्च हो पाये।

समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों और जैव व सांस्कृतिक विविधता के बावजूद भारत को पर्यटन से 1.8 अरब अमरीकी डॉलर के बराबर आमदनी होती है, जबकि छोटे से देश सिंगापुर को इससे 3.4 अरब डॉलर तथा थाईलैंड को 6.8 अरब डॉलर की आय होती है। इस तरह आम तौर पर विकास का पासपोर्ट माने जाने वाले पर्यटन उद्योग को हमारे देश में बढ़ावा देने

की बड़ी सख्त आवश्यकता है। जैसे–जैसे आमदनी बढ़ेगी और परिवहन प्रणाली में सुधार होगा, अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पर्यटन में संख्या की दृष्टि से बढ़ोत्तरी होना एक तरह से तय है। आज अधिकतर पर्यटक समुद्र तटवर्ती सैरगाहोंया पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध शहरों की सैर करने की बजाय आकर्षक प्राकृतिक माहौल में या संरक्षण को ध्यान में रखकर हिफाजत से रखे गये स्थानों की यात्रा पर जाना अधिक पसंद करते हैं। इस तरह का पर्यटन एक तरह का वैकल्पिक पर्यटन है, जिसे प्राकृतिक पर्यटन या इको–टूरिज्म (पारिस्थितिकी पर्यटन) के नाम से भी जाना जाता है। प्राकृतिक पर्यटन में किसी खास प्राकृतिक स्थान की यात्रा की जाती है और इसका उद्देश्य आमतौर पर सैर–सपाटा और मनोरंजन होता है। इको–टूरिज्म सोसायटी ने इको–टूरिज्म की परिभाषा जिम्मेदारी की भावना से प्राकृतिक स्थानों की यात्रा जिससे पर्यावरण का संरक्षण हो और स्थानीय लोगों के कल्याण को बढ़ावा मिले। इको टूरिज्म बड़े पैमाने पर विकसित हो रहा क्षेत्र है जिसकी अनुमानित वार्षिक विकास दर 10–15 प्रतिशत है। दुनिया भर के तमाम पर्यटकों में से 40–60 प्रतिशत प्रकृति प्रेमी पर्यटक होते हैं और 20–40 प्रतिशत वन्य–जीवों में दिलचस्पी लेने वाले पर्यटक होते हैं।

कुछ अनुमानों के अनुसार पर्यटन से सम्बन्धित गतिविधियों से दुनिया के सबसे बड़े आर्थिक क्षेत्र का निर्माण होता है। विश्व पर्यटन संगठन के आंकड़ों से संकेत मिलता है कि सकल घरेलू उत्पाद में इन गतिविधियों का योगदान 4 प्रतिशत से ज्यादा है और विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में इनका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष योगदान संयुक्त रूप से 11 प्रतिशत से अधिक है। पर्यटन से संबंधित गतिविधियों से आज रोजगार के 20 करोड़ अवसर प्राप्त हो रहे हैं। पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार के अन्तर्गत केवल होटलों, विमान सेवाओं आदि से संबंधित नौकरियाँ ही शामिल नहीं है, बल्कि खाद्य पदार्थों संबंधी समूची उत्पादन और वितरण प्रणाली हस्तशिल्प, उत्पादों की सप्लाई व उनका विपणन, मनोरंजन, खेल–कूद, पर्यटन से समबद्ध खान–पान संबंधी गतिविधियाँ और अर्थव्यवस्था के राजमार्ग निर्माण, हवाई अड्डों में निवेश जैसे क्षेत्र भी इसमें शामिल हैं। इस तरह आज पर्यटन को देश की नियोजन संबंधी प्राथमिकताओं में सही स्थान मिल रहा है।

पर्यटन आधुनिक समाज की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो कि विश्वव्यापी महत्व वाली जोरदार आर्थिक गतिविधि के रूप में उभर कर सामने आयी है। मानवीय गतिविधियों का शायद ही कोई ओर क्षेत्र होगा जिसमें इतने सारे लोग संलग्न हो। रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने, आमदनी और विदेशी मुद्रा अर्जित करने, पर्यावरण में सुधार, संस्कृति और परम्पराओं के संरक्षण और इसी तरह की अन्य गतिविधियों के माध्यम से समग्र विकास को बढ़ावा देने वाले एक कारगर माध्यम के रूप में पर्यटन ने अपनी जगह बना ली है। इसके अलावा पर्यटन आज दुनिया का सबसे व्यापक तरीके से विकसित हो रहा उद्योग है और इको–टूरिजम तो विकासमान अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन उद्योग का सबसे तेजी से विकसित हो रहा क्षेत्र है। विश्व पर्यटन संगठन का अनुमान है कि न केवल अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या में (जिसके 2021 तक 1 अरब को पार कर जाने की संभावना है), बल्कि इको–टूरिज्म गतिविधियों में भाग लेने वाले पर्यटकों के प्रतिशत में भी भारी बढ़ोत्तरी होगी। इको–टूरिज्म को आर्थिक दृष्टि से और अधिक महत्वपूर्ण और टिकाऊ बनाने के लिए पर्यटन उद्योग, सरकारी विभाग, स्थानीय लोगों और स्वयं पर्यटकों के बीच सहयोग और भागीदारी की आवश्यकता होगी। सन 2010 में दुनिया भर में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या 80.9 करोड़ रही थी जो कि इससे पहले के सात की तुलना में 7.4 प्रतिशत अधिक है। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों से होने वाली आमदनी 476 अरब अमरीकी डॉलर के बराबर पहुंच गई जो कि 2005 की तुलना में 4.5 प्रतिशत अधिक है। हाल के वर्षों में विकासशील देशों की यात्रा करने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या में भारी बढ़ोत्तरी हुई है और बढ़ोत्तरी का यह रूझान जारी रहने की संभावना है।

विश्व पर्यटन संगठन ने अनुमान लगाया है कि प्राकृतिक पर्यटन (इसी का एक रूप इको–टूरिज्म है) से 2010 में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खर्च के रूप में 7 प्रतिशत की आमदनी हुई। वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (विश्व संसाधन संस्थान) के अनुसार 2000 के दशक के प्रारम्भ के वर्षों में पर्यटन में समग्र रूप से 4 प्रतिशत और प्राकृतिक पर्यटन में 10–30 प्रतिशत की दर से बढ़ोत्तरी हो रही थी। 2010 में एशिया–प्रशान्त क्षेत्र में टूर ऑपरेटरों के सर्वेक्षण से भी इन आँकड़ों की पुष्टि हो जाती है। इस क्षेत्र के देशों में 10–25 प्रतिशत की वार्षिक विकास दर देखी गई है। इसके अलावा विश्व पर्यटन संगठन के अनुमानों से पता चलता है कि दुनिया में इको–टूरिज्म पर होने वाला खर्च 20 प्रतिशत वार्षिक कीदर से बढ़ रहा है जो कि पर्यटन उद्योग की समग्र औसत विकास दर के पाँच गुने के बराबर है।

निष्कर्ष –

अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि इको टूरिज्म औद्योगिक विकास, सूचना क्रान्ति एवं पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिलने के कारण व्यापक स्तर पर फैले प्रदूषण के कारण प्राकृतिक वातावरण और मानव जीवन के बीच उत्पन्न असंतुलन दूर करने का एक प्रयास है। इको टूरिज्म जनहित में एक व्यापक आंदोलन है। मानव समुदाय द्वारा पारिस्थितिकी (पर्यावरण) की उपेक्षा के कारण आज इको टूरिज्म अनिवार्य हो गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी इसी के मद्देनजर वर्ष 2002 को 'इंटरनेशनल इयर ऑफ माउन्टेन' घोषित किया था। इसके पीछे राष्ट्र संघ का प्रत्यक्ष उद्देश्य प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत को बचाना है। इको टूरिज्म पर्यटन और पर्यावरण के बीच बेहतर संतुलन स्थापित करने के लिए पर्यटन प्रबंधन और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का एक माध्यम है। इसमें स्थानीय लोगों के हित तो सुनिश्चित रहेंगे ही, वहाँ के रीति–रिवाजों, सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण एवं लोक गीत एवं नृत्य का प्रचार–प्रसार भी होगा।

संदर्भ –

1. डॉ. एल.पी. सिंह – विपणन प्रबंधन की दृष्टि से अतिथि क्षेत्र का विकास, रोजगार समाचार, साप्ताहिक, नई दिल्ली, 9–15 अगस्त, 2003, पृष्ठ 5–6।
2. दैनिक जागरण – दैनिक पत्र, रीवा दिनांक 25 अगस्त 2004.
3. ऊषा वन्दे – पर्यावरण पर्यटन और पर्वत मालायें, योजना पत्रिका, वर्ष 46, अंक 5, पृष्ठ 17–21.
4. एम.एस. कोहली – पर्यावरण पर्यटन हिमालय, योजना पत्रिका, वर्ष 46, अंक 5, पृष्ठ 25.
5. गोपी, एन. घोष – स्थायी पर्वत विकास, योजना पत्रिका, अगस्त 2004, पृष्ठ 47–52.
6. कुमार, रवि भूषण – कोस्टल टूरिज्म एण्ड इन्वायरमेन्ट, ए.पी.एच., पब्लिशिंग कारपोरेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 8–10.
7. आनन्द, एम.एस. (1976) – टूरिज्म एण्ड होटल इंडस्ट्री इन इंडिया, प्रिन्टिस हॉल, दिल्ली, पृष्ठ 2–3.
8. भाटिया, ए.के. (1978) – टूरिज्म इन इंडिया : हिस्ट्री एंड डिवलपमेंट स्ट्रलिंग, नई दिल्ली, पृष्ठ 42.
9. यंग जॉर्ज (1993) – टूरिज्म ब्लैसिंग और ब्लाइट पैलगुइन बुक्स, हामोन्ड्स बर्थ, इंग्लैण्ड, पृष्ठ 10–11.
10. भाटिया, ए.के. (1978) – टूरिज्म इन इंडिया : हिस्ट्री एंड डिवलपमेंट स्ट्रलिंग, नई दिल्ली, पृष्ठ 42.
11. रंधावा, एम.एस. (1975) – ट्रैवल्स इन दि वैस्टर्न हिमालय, थॉम्सन प्रेस, नई दिल्ली, पृष्ठ 1–12.
12. "And O; Ye Fountains, Medows, Hills and Graves Forebode not any Serving of our loves Yet in my heart of hearts I feel your might: I only have relinquished one delight to live beneath your more habitual Sway – Worth.
13. पंचायत कोचिंग इंस्टीट्यूट, काठमांडू टूरिज्म इन नैपाल तीर्थराज तुलाधर का लेख व आनन्द एम.एम. टू एंड हो.इं., पृष्ठ 1,2,3 तथा यंग जार्ज टू.ब्लै. और ब्ला. पृष्ठ 14.
14. भाटिया; ए.के. (1978). टूरिज्म इन इंडिया : हिस्ट्री एंड डिवलपमेंट स्ट्रलिंग, नई दिल्ली, पृष्ठ 138, 173.
15. Anand, M.M. (1967). Tourism and Hotel Industries in India, p. 22.
16. देशाटन प्राचीन भारतीय शिक्षाशैली का एक अनिवार्य अंग था जिसके अनुसार शिक्षापूर्ण करने पर छात्र भ्रमण करने के लिए बाहर निकल पड़ता था। बडोला मध्य हिमालय में शिक्षा एवं शोध बागीश प्रकाशन, सहारनपुर.
17. T.V. Singh – Intergrated Mountain Development, p. 58.
18. आनन्द, एम.एम. टू एंड हो. इं. तथा जार्ज यंग टू.ब्लै. औ. ब्ला. क्रमशः पृष्ठ 8–22 तथा पृष्ठ 12.?
19. R. Tuladhar (1971) – Tourism in Nepal. Panchayat coching institute, Kathmandu, p. 1-10.
20. A.K. Bhatia, Tourism Development Principles and Practices. Sterling Pub. Priv. Ltd., New Delhi, p. 98.
21. A.K. Raina, S.K. Agarwal. The Essence of Tourism Development, Sarup & Sons, New Delhi.
22. Singh, Dr. Sumet (1998). Concept of Tourism. Malind Research Paper.

.